

रविवार 8 मार्च, 2020

विषय — आदमी

स्वर्ण पाठ: फिलिप्पियों 4 : 13

"जो मुझे सामर्थ देता है उस में मैं सब कुछ कर सकता हूँ।"

उत्तरदायी अध्ययन:

अय्यूब 22 : 21-23

अय्यूब 23 : 10, 11, 13, 14

- 21 उस से मेलमिलाप कर तब तुझे शान्ति मिलेगी; और इस से तेरी भलाई होगी।
- 22 उसके मुंह से शिक्षा सुन ले, और उसके वचन अपने मन में रख।
- 23 यदि तू सर्वशक्तिमान की ओर फिर के समीप जाए, और अपने डेरे से कुटिल काम दूर करे, तो तू बन जाएगा।
- 10 परन्तु वह जानता है, कि मैं कैसी चाल चला हूँ; और जब वह मुझे ता लेगा तब मैं सोने के समान निकलूंगा।
- 11 मेरे पैर उसके मार्गों में स्थिर रहे; और मैं उसी का मार्ग बिना मुड़े थामे रहा।
- 13 परन्तु वह एक ही बात पर अड़ा रहता है, और कौन उसको उस से फिरा सकता है? जो कुछ उसका जी चाहता है वही वह करता है।
- 14 जो कुछ मेरे लिये उसने ठाना है, उसी को वह पूरा करता है; और उसके मन में ऐसी ऐसी बहुत सी बातें हैं।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. II शमूएल 22 : 33

³³ यह वही ईश्वर है, जो मेरा अति दृढ़ क़िला है, वह खरे मनुष्य को अपने मार्ग में लिए चलता है।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

2. दानिय्येल 2 : 1-6, 10, 12, 16-20, 25-28 (से .), 36, 46-48

- 1 अपने राज्य के दूसरे वर्ष में नबूकदनेस्सर ने ऐसा स्वप्न देखा जिस से उसका मन बहुत ही व्याकुल हो गया और उसको नींद न आई।
- 2 तब राजा ने आज्ञा दी, कि ज्योतिषी, तन्त्री, टोनहे और कसदी बुलाए जाएं कि वे राजा को उसका स्वप्न बताएं; सो वे आए और राजा के साम्हने हाजिर हुए।
- 3 तब राजा ने उन से कहा, मैं ने एक स्वप्न देखा है, और मेरा मन व्याकुल है कि स्वप्न को कैसे समझूं।
- 4 कसदियों ने, राजा से अरामी भाषा में कहा, हे राजा, तू चिरंजीव रहे! अपने दासों को स्वप्न बता, और हम उसका फल बताएंगे।
- 5 राजा ने कसदियों को उत्तर दिया, मैं यह आज्ञा दे चुका हूं कि यदि तुम फल समेत स्वप्न को न बताओगे तो तुम टुकड़े टुकड़े किए जाओगे, और तुम्हारे घर फुंकवा दिए जाएंगे।
- 6 और यदि तुम फल समेत स्वप्न को बता दो तो मुझ से भांति भांति के दान और भारी प्रतिष्ठा पाओगे।
- 10 कसदियों ने राजा से कहा, पृथ्वी भर में ऐसा कोई मनुष्य नहीं जो राजा के मन की बात बता सके; और न कोई ऐसा राजा, वा प्रधान, वा हाकिम कभी हुआ है जिसने किसी ज्योतिषी वा तन्त्री, वा कसदी से ऐसी बात पूछी हो।
- 12 इस पर राजा ने झुंझलाकर, और बहुत की क्रोधित हो कर, बाबुल के सब पण्डितों के नाश करने की आज्ञा दे दी।
- 16 और दानिय्येल ने भीतर जा कर राजा से बिनती की, कि उसके लिये कोई समय ठहराया जाए, तो वह महाराज को स्वप्न का फल बता देगा।
- 17 तब दानिय्येल ने अपने घर जा कर, अपने संगी हनन्याह, मीशाएल, और अजर्याह को यह हाल बता कर कहा,
- 18 इस भेद के विषय में स्वर्ग के परमेश्वर की दया के लिये यह कह कर प्रार्थना करो, कि बाबुल के और सब पण्डितों के संग दानिय्येल और उसके संगी भी नाश न किए जाएं।
- 19 तब वह भेद दानिय्येल को रात के समय दर्शन के द्वारा प्रगट किया गया। सो दानिय्येल ने स्वर्ग के परमेश्वर का यह कह कर धन्यवाद किया,
- 20 परमेश्वर का नाम युगानुयुग धन्य है; क्योंकि बुद्धि और पराक्रम उसी के हैं।
- 25 तब अर्योक ने दानिय्येल को राजा के सम्मुख शीघ्र भीतर ले जा कर उस से कहा, यहूदी बंधुओं में से एक पुरूष मुझ को मिला है, जो राजा को स्वप्न का फल बताएगा।
- 26 राजा ने दानिय्येल से, जिसका नाम बेलतशस्सर भी था, पूछा, क्या तुझ में इतनी शक्ति है कि जो स्वप्न मैं ने देखा है, उसे फल समेत मुझे बताए?
- 27 दानिय्येल ने राजा का उत्तर दिया, जो भेद राजा पूछता है, वह न तो पण्डित न तन्त्री, न ज्योतिषी, न दूसरे भावी बताने वाले राजा को बता सकते हैं,

- 28 परन्तु भेदों का प्रगटकर्त्ता परमेश्वर स्वर्ग में है; और उसी ने नबूकदनेस्सर राजा को जताया है कि अन्त के दिनों में क्या क्या होने वाला है।
- 36 स्वपन तो यों ही हुआ; और अब हम उसका फल राजा को समझा देते हैं।
- 46 इतना सुनकर नबूकदनेस्सर राजा ने मुंह के बल गिर कर दानिय्येल को दण्डवत की, और आज्ञा दी कि उसको भेंट चढ़ाओ, और उसके साम्हने सुगन्ध वस्तु जलाओ।
- 47 फिर राजा ने दानिय्येल से कहा, सच तो यह है कि तुम लोगों का परमेश्वर, सब ईश्वरों का ईश्वर, राजाओं का राजा और भेदों का खोलने वाला है, इसलिये तू यह भेद प्रगट कर पाया।
- 48 तब राजा ने दानिय्येल का पद बढ़ा किया, और उसको बहुत से बड़े बड़े दान दिए; और यह आज्ञा दी कि वह बाबुल के सारे प्रान्त पर हाकिम और बाबुल के सब पण्डितों पर मुख्य प्रधान बने।

3. नीतिवचन 3 : 1, 4-6

- 1 हेमेरे पुत्र, मेरी शिक्षा को न भूलना; अपने हृदय में मेरी आज्ञाओं को रखे रहना;
- 4 और तू परमेश्वर और मनुष्य दोनों का अनुग्रह पाएगा, तू अति बुद्धिमान होगा॥
- 5 तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना।
- 6 उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिये सीधा मार्ग निकालेगा।

4. यूहन्ना 5: 1-9, 16-19, 30 (से 1st :)

- 1 इन बातों के पीछे यहूदियों का एक पर्व हुआ और यीशु यरूशलेम को गया॥
- 2 यरूशलेम में भेड़-फाटक के पास एक कुण्ड है जो इब्रानी भाषा में बेतहसदा कहलाता है, और उसके पांच ओसारे हैं।
- 3 इन में बहुत से बीमार, अन्धे, लंगड़े और सूखे अंग वाले पानी के हिलने की आशा में पड़े रहते थे।
- 4 क्योंकि नियुक्ति समय पर परमेश्वर के स्वर्गदूत कुण्ड में उतरकर पानी को हिलाया करते थे: पानी हिलते ही जो कोई पहिले उतरता वह चंगा हो जाता था चाहे उसकी कोई बीमारी क्यों न हो।
- 5 वहां एक मनुष्य था, जो अड़तीस वर्ष से बीमारी में पड़ा था।
- 6 यीशु ने उसे पड़ा हुआ देखकर और जानकर कि वह बहुत दिनों से इस दशा में पड़ा है, उस से पूछा, क्या तू चंगा होना चाहता है?
- 7 उस बीमार ने उस को उत्तर दिया, कि हे प्रभु, मेरे पास कोई मनुष्य नहीं, कि जब पानी हिलाया जाए, तो मुझे कुण्ड में उतारे; परन्तु मेरे पहुंचते पहुंचते दूसरा मुझ से पहिले उतर पड़ता है।
- 8 यीशु ने उस से कहा, उठ, अपनी खाट उठाकर चल फिर।
- 9 वह मनुष्य तुरन्त चंगा हो गया, और अपनी खाट उठाकर चलने फिरने लगा।
- 16 इस कारण यहूदी यीशु को सताने लगे, क्योंकि वह ऐसे ऐसे काम सब्त के दिन करता था।

- 17 इस पर यीशु ने उन से कहा, कि मेरा पिता अब तक काम करता है, और मैं भी काम करता हूं।
18 इस कारण यहूदी और भी अधिक उसके मार डालने का प्रयत्न करने लगे, कि वह न केवल सब्त के दिन की विधि को तोड़ता, परन्तु परमेश्वर को अपना पिता कह कर, अपने आप को परमेश्वर के तुल्य ठहराता था॥
19 इस पर यीशु ने उन से कहा, मैं तुम से सच सच कहता हूं, पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है, क्योंकि जिन जिन कामों को वह करता है उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है।
30 मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता।

5. यूहन्ना 14 : 10 (पिता जो)

- 10 ...पिता मुझ में रहकर अपने काम करता है।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 281 : 14-17

एक अहंकार, एक मन या आत्मा जिसे भगवान कहा जाता है, अनंत व्यक्तित्व है, जो सभी प्रकार और शांति प्रदान करता है और जो व्यक्तिगत आध्यात्मिक व्यक्ति और चीजों में वास्तविकता और दिव्यता को दर्शाता है।

2. 475 : 5-22

सवाल. — आदमी क्या है?

उत्तर। — आदमी भौतिक नहीं है; वह मस्तिष्क, रक्त, हड्डियों और अन्य भौतिक तत्वों से बना नहीं है। पवित्रशास्त्र हमें सूचित करता है कि मनुष्य परमेश्वर की छवि और समानता में बना है। सामग्री वह समानता नहीं है। आत्मा की समानता आत्मा के विपरीत नहीं हो सकती। मनुष्य आध्यात्मिक और परिपूर्ण है; और आध्यात्मिक और परिपूर्ण होने के कारण, उसे इस तरह से क्रिश्चियन साइंस में समझना चाहिए। आदमी विचार है, प्रेम की छवि; वह काया नहीं है। वह ईश्वर का यौगिक विचार है, जिसमें सभी सही विचार शामिल हैं; भगवान की छवि और समानता को दर्शाता है कि सभी के लिए सामान्य शब्द; विज्ञान में पाई जाने वाली सचेत पहचान, जिसमें मनुष्य ईश्वर या मन का प्रतिबिंब है, और इसलिए शाश्वत है; जो परमात्मा से अलग नहीं है; जिसे देवता से एक भी गुण नहीं मिला है; जो अपने आप में कोई जीवन, बुद्धिमत्ता और न ही रचनात्मक शक्ति रखता है, बल्कि आध्यात्मिक रूप से वह सब कुछ दर्शाता है जो उसके निर्माता का है।

3. 258 : 9-14 अगला पृष्ठ

मनुष्य अंदर एक मन के साथ एक भौतिक रूप से अधिक है, जिसे अमर होने के लिए अपने वातावरण से बचना चाहिए। मनुष्य अनंतता को दर्शाता है, और यह प्रतिबिंब भगवान का सही विचार है।

ईश्वर मनुष्य में अनंत विचार व्यक्त करता है जो हमेशा अपने आप को विकसित करता है, एक व्यापक आधार से ऊंचा और ऊंचा होता है। मन सत्य की अनंतता में मौजूद है। हम ईश्वर के बारे में मनुष्य की सच्ची ईश्वरीय छवि और समानता के रूप में नहीं जानते हैं।

अनंत सिद्धांत अनंत विचार और आध्यात्मिक व्यक्तित्व द्वारा परिलक्षित होता है, लेकिन तथाकथित इंद्रियों की सामग्री का सिद्धांत या उसके विचार का कोई संज्ञान नहीं है। मानव क्षमताएँ बढ़ जाती हैं और अनुपात में परिपूर्ण हो जाती हैं क्योंकि मानवता मनुष्य और ईश्वर की सच्ची अवधारणा को प्राप्त करती है।

मनुष्यों में आध्यात्मिक व्यक्ति और उसके विचार की अनंत सीमा का बहुत ही अपूर्ण अर्थ है। अनन्त जीवन उसी का है। अनंत काल तक ईश्वर की सरकार के तहत, कभी पैदा नहीं हुआ और कभी नहीं मरना मनुष्य के लिए, उसकी उच्च संपत्ति से गिरना असंभव था।

आध्यात्मिक अर्थों के माध्यम से आप देवत्व के हृदय को समझ सकते हैं, और इस तरह विज्ञान में सामान्य शब्द *आदमी* को समझना शुरू कर सकते हैं। मनुष्य देवता में लीन नहीं है, और मनुष्य अपने व्यक्तित्व को नहीं खो सकता, क्योंकि वह शाश्वत जीवन को दर्शाता है; न ही वह एक पृथक, एकान्त विचार है, क्योंकि वह अनंत मन, सभी पदार्थों के योग का प्रतिनिधित्व करता है।

दिव्य विज्ञान में, मनुष्य भगवान की सच्ची छवि है। मसीह यीशु में ईश्वरीय प्रकृति को सर्वश्रेष्ठ रूप से व्यक्त किया गया था, विचार जो मनुष्य को पतित, बीमार, पापी और मरने के रूप में प्रस्तुत करते हैं। वैज्ञानिक होने और दैवीय उपचार की मसीह की समझ में एक आदर्श सिद्धांत और विचार शामिल हैं, पूर्ण ईश्वर और पूर्ण मनुष्य, विचार और प्रदर्शन के आधार के रूप में।

4. 302 : 3-24

भौतिक शरीर और मन लौकिक हैं, लेकिन वास्तविक मनुष्य आध्यात्मिक और शाश्वत है। असली आदमी की पहचान खो नहीं जाती है, लेकिन इस स्पष्टीकरण के माध्यम से मिली है; क्योंकि अस्तित्व और सभी पहचानों के प्रति सचेत अनन्तता असतत है और अपरिवर्तित बनी हुई है। यह असंभव है कि आदमी को उस वास्तविक को खोना चाहिए जो वास्तविक है, जब भगवान अनंत काल से मनुष्य के हैं। यह धारणा कि मन पदार्थ में है, और

तथाकथित सुख और पीड़ा, जन्म, पाप, बीमारी, और पदार्थ की मृत्यु, वास्तविक हैं, एक नश्वर विश्वास है; और यह विश्वास वह सब है जो कभी नहीं खोएगा।

मनुष्य की हमारी परिभाषा को जारी रखते हुए, हमें याद रखना चाहिए कि सामंजस्यपूर्ण और अमर आदमी हमेशा के लिए अस्तित्व में है, और किसी भी जीवन, पदार्थ और बुद्धि के नश्वर भ्रम से परे और हमेशा मौजूद है। यह कथन तथ्य पर आधारित है, काल्पनिक नहीं। मनुष्य के पूर्ण, यहाँ तक कि पिता के रूप में भी पूर्ण होने का विज्ञान बताता है, क्योंकि आध्यात्मिक मनुष्य का आत्मा या मन, ईश्वर है, जो सभी का दिव्य सिद्धांत है, और क्योंकि यह वास्तविक व्यक्ति आत्मा के बजाय आत्मा के नियम द्वारा शासित है, न कि पदार्थ के तथाकथित नियमों द्वारा।

5. 94: 1-11, 24 (से,), 30-32 (से 1st.)

यीशु ने सिखाया कि केवल एक ईश्वर है, एक आत्मा है, जो आदमी को खुद की छवि और समानता में बनाता है, — आत्मा की, पदार्थ की नहीं। मनुष्य अनंत सत्य, जीवन और प्रेम को दर्शाता है। इस प्रकार, मनुष्य की प्रकृति को समझा जाता है, इसमें वह सब शामिल होता है, जो पवित्र शास्त्र में प्रयुक्त "छवि" और "समानता" शब्दों से निहित है। वास्तव में ईसाई और वैज्ञानिक व्यक्तित्व और भगवान के लिए मनुष्य के संबंध के साथ, जो उस प्रदर्शन के साथ, जिसने रब्बियों को भड़काया, और उन्होंने कहा: "उसे क्रूस पर चढ़ा, क्रूस पर।.... ..और उस व्यवस्था के अनुसार वह मारे जाने के योग्य है क्योंकि उस ने अपने आप को भगवान का पुत्र बनाया।"

हमारे गुरु ने मानव जाति के विचारों को आसानी से पढ़ा,

इस विचार का एक अनुमान आध्यात्मिक विकास और एक मन की अनंत क्षमताओं के साथ मेल खाता है।

6. 128 : 7 (व्यापार)-19

... व्यापारिक पुरुषों और सुसंस्कृत विद्वानों ने पाया है कि क्रिएस्टियन साइंस उनकी सहनशक्ति और मानसिक शक्तियों को बढ़ाता है, चरित्र की उनकी धारणा को बढ़ाता है, उन्हें एकरूपता और समझ देता है और उनकी साधारण क्षमता को पार करने की क्षमता देता है। मानव मन, जो इस आध्यात्मिक समझ के साथ जुड़ा हुआ है, अधिक लोचदार हो जाता है, अधिक धीरज रखने में सक्षम होता है, कुछ हद तक खुद से बच जाता है, और कम प्रतिनिधि की आवश्यकता होती है। मनुष्य के अव्यक्त क्षमताओं और संभावनाओं को विकसित करने के विज्ञान का ज्ञान। यह विचार के वातावरण का विस्तार करता है, जिससे नश्वर व्यापक और उच्चतर क्षेत्रों तक पहुँच प्राप्त करता है। यह विचारक को अंतर्दृष्टि और दृष्टिकोण की अपनी मूल हवा में उठाता है।

7. 519 : 11-21

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

मानवीय क्षमता ईश्वर की रचना और उसके साथ जाने वाली ईश्वरीय शक्ति और उपस्थिति को समझने और उसकी आध्यात्मिक उत्पत्ति को प्रदर्शित करने के लिए धीमी है। नश्वर कभी भी अनंत को नहीं जान सकते, जब तक कि वे पुरानी मानवता को छोड़ कर आध्यात्मिक छवि और समानता तक नहीं पहुंचते। थैथी अनंत को कौन जान सकता है! हम उसे कैसे घोषित करेंगे, बिना प्रेषित की भाषा में, "जब तक कि हम सब के सब विश्वास, और परमेश्वर के पुत्र की पहिचान में एक न हो जाएं, और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएं और मसीह के पूरे डील डौल तक न बढ़ जाएं"?

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6